वालो विरह रस भीनों

वालो विरह रस भीनों रंग विरहमां रमाड़तो, वासना रूदन करे जल धार।
आप ओलखावी अलगो थयो अमथी, जे कोई हुती तामसियों सिरदार।।

कलकली कामनी वदन विलखाविया, विश्वमां वरतियो हा हा कार।
उदमाद अटपटा अंग थी टालीने, माननी सहुए मनावियो हार।।

पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो, न कांई जारवंतियो विना जार।
पात्रियो पिउ थकी अमें जे अभागणियों, रहियो अंग दाग लगावन हार।।

स्या रे एवा करम करया हता कामनी, धाम मांहें धणी आगल आधार।
हवे काढ़ो मोह जल थी बूडती कर ग्रही, कहे महामती मारा भरतार।।